जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर सत्र 2020–2022

एम.ए ज्योतिर्विज्ञान अध्ययनशाला चार सेमेस्टर (द्वि–वर्षीय) पाठ्यक्रम

एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान प्रथम सेमेस्टर

Course	Paper #	Title of the Paper (S)	Credits
Core	JT-101	प्रारम्भिक खगोल एवं बृहमाण्ड विज्ञान	3
Core	JT-102	जन्मपत्रिका साधन	3
Core	JT-103	सिद्वांत गणित	3
Core	JT-104	ज्योतिष का इतिहास	3
Core Lab	JL-105	प्रायोगिक / लघु शोध प्रबन्ध	6
Seminar	JS-106	सेमिनार	1
Assignment	JA-107	असाइन्मेट	1
Viva-Voce	JV-108	व्यापक मौखिक परीक्षा	4

एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान द्वितीय सेमेस्टर

Course	Paper #	Title of the Paper (S)	Credits
Core	JT-201	होरा ज्योतिष – प्रथम	3
Core	JT-202	मुहूर्त एवं पर्व	3
Core	JT-203	संहिता भाग – 1	3
Core	JT-204	वास्तु	3
Core Lab	JL-205	प्रायोगिक / लघु शोध प्रबन्ध	6
Seminar	JS-206	सेमिनार	1
Assignment	JA-207	असाइन्मेट	1
Viva-Voce	JV-208	व्यापक मौखिक परीक्षा	4

पेज नं. 1 से 33 तक.

ज्योतिर्विज्ञान अध्ययनशाला
जीवीजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान तृतीय सेमेस्टर

Course	Paper #	Title of the Paper (S)	Credits
Core	JT-301	होरा ज्योतिष – द्वितीय	3
Core	JT-302	संहिता भाग – 2	3
Elective	JT-303	चिकित्सा ज्योतिष	3
Elective	JT-304	स्त्री एवं बाल जातक	3
Elective	JT-305	वाणिज्य ज्योतिष	3
Elective	JT-306	अर्वाचीन ज्योर्तिगणित	3
Core Lab	JL-307	प्रायोगिक – लघु शोध प्रबन्ध	6
Seminar	JS-308	सेमिनार	1
Assignment	JA-309	असाइन्मेट	1
Viva-Voce	JV-310	व्यापक मौखिक परीक्षा	4

एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान चतुर्थ सेमेस्टर

Course	Paper #	Title of the Paper (S)	Credits
Core	JT-401	होरा ज्योतिष – तृतीय	3
Core	JT-402	अध्यात्म ज्योतिष	3
Elective (Centric)	JT-403	प्रश्न ज्योतिष	3
Elective (Centric)	JT-404	तजिक वर्षफल	3
Elective (Centric) (Generic)	JT-405	रत्न विज्ञान	3
Elective (Centric)	JT-406	वर्षा और मौसम विज्ञान	3
Core Lab	JL-407	प्रायोगिक – लघु शोध प्रबन्ध	6
Seminar	JS-408	सेमिनार	1
Assignment	JA-409	असाइन्मेट	1
Viva-Voce	JV-410	व्यापक मौखिक परीक्षा	4

ज्योतिर्विज्ञान अध्ययनशाला
जीवीजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

प्रथम सेमेस्टर सत्र 2020–22

101 प्रथम प्रश्नपत्र : प्रारंभिक खगोल एवं ब्रह्माण्ड विज्ञान

JV-101, Ist Paper :Basic Principles of Astronomy and Cosmology

परिचयात्मक खगोल भैतिकी :85 अकं मुख्य परीक्षा 15 इस प्रकार प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अकं का होगा

प्रथम इकाई

खगोलिय परिभाषाएं रेखाचित्र सहितः

1. खगोल व सौरमंडल 2. खगोलय विषुववृत 3. विषुव वृत्तिय ध्रुव 4. क्रांति वृत्त 5. कदम्ब 6.क–मध्य 7. चंद्र मार्ग 8. अठ्ठासी 8 तारामंडलो के नाम 9. राशिचक 10. उत्तरायन और दक्षिणायन बिंदु 11. बसंत और शरत सम्पत बिंदु 12. अयन और संपत चलन तथा अयनांश 13. यामोत्तर वृत 14. होरा वृत 15. भोग और शर 16. विषुवांश और कातिं 17. उन्नतांश और दिगंश 18. भू–केन्द्रिय विश्रव और सूर्य केन्द्रिय विश्व में ग्रहों का कम .

द्वितीय इकाई

(क) ग्रहों की आघारभूत विशेषताएं :

1. ग्रहों की सूर्य से अधिकतम न्यूनतम दूरी. 2.सूर्य पथ भ्रमण काल 3. अक्ष पर घूर्णन काल 4. अक्ष का कोण 5. क्रांतिवृत पर ग्रह की कक्षा का कोण 6. भूमध्य रेखीय व्यास 7. संहिता 8.घनत्व 9. वायू मंडल 10. औसत सतही तापमान 11. सतह पर गुरूत्व 12. प्रत्येक ग्रह के उपग्रहों की संख्या व प्रमुख उपग्रहों के नाम.

(ख) पारंपरिक खगोलिय नियम : सूर्य सिद्धांत अनुसार ग्रह गति कारण तथा भगण काल ग्रहों की आठ प्रकार की गतियाँ (सूर्य सिद्धांत मध्यम अधिकार व स्पष्ट अधिकार)

(ग) आधुनिकखगोलियनियमः केपलर के ग्रहगतिनियम न्यूटन के गति के तीन सिद्धांत.

तृतीय इकाई

1. (क) तारों का कान्तिमान (मैग्नीट्यूड) 2. चार मुख्य स्पेक्ट्रम 3. तारों के सात स्पेक्ट्रमीय वर्ग 4. एच. आर. ग्राफ का संक्षिप्त परिचय व निर्माण करना.

(ख) तारे के जन्म विकास विस्फोट तक की यात्रा का स–चित्रपरिचय चंद्रशेखर सीमा सहित

चतुर्थ इकाई

प्रारम्भिक ब्रह्माण्ड विज्ञान :

(क) 1. ऋगवैदिक नांसदीय सूक्त का सृष्टि पूर्व का वर्णन 2. हिरण्यगर्भ सूक्त में सृष्टि का वर्णन 3. श्रीमत् भागवत का सृष्टि कम निरूपण व इसके सांख्य दर्शन परक आधार की सेक्षिप्त विवेचना और चार प्रकार के प्रलय

(ख) सूर्य सिद्वांत में सृष्टि निरूपण एवं सिद्धांत शिरोमणि–गोलाध्याय में सृष्टि कम

(ग) सृष्टि का महाविस्फोट (बिग–बैंग) माडल तथा इसका पक्ष–विपक्ष

(घ) संक्षिप्त टिप्पणियां : आकाशगंगाएं नीहारिका(नेबुला) कृष्ण विवर (ब्लैक होल)

ज्यातावज्ञान अध्ययनशाला
जीवीजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

पंचम इकाई

आकाश दर्शन :

1.बारह राशियों का रेखा चित्र इन्में सिथित नक्षत्र व अन्य ताराओं के भारतिय,अरबी ग्रीक नाम सहित, राशियों के आकाश में दिखने के सामान्य नियम.

2.ध्रुव तारा सहित सप्त ऋषि मंडल, त्रिशंकु शिशुमार चक हिरनी या व्याघ्र तारामंडल के रेखा चित्र व दिखने का समय बीस चमकीले तारे.

3.अट्ठाईस तारा मंडलो के नाम भारतिय नक्षत्रों की आकाश में पहिचान, नक्षत्रों के योगताराओं के संस्कृत अंगरेजी नाम भोग अंश शर व कान्तिमान व परस्पर अ समान दूरी, इनकी राशी में और राशी से भिन्न अन्य तारामंडल में स्थिती का ज्ञान, चंद्रमा इनमें से किन नक्षत्रों से योग कर सकता और किन से नहीं, इसका ज्ञान.

4.संक्षिप्त टिप्पणी हेतु प्रमुख आकाशीय घटनाएं : 1 आच्छादन (आक्ल्टेशन) 2 सूर्य विम्ब पर से बुध शुक संकमण 3 रोहिणी शकट वेध 4 सूर्य विम्ब पर धव्वो का ग्यारह बर्षीय चक 5 प्रमुख उल्का पतन के दृश्यमान होने की वार्षीक तारीखे 6 सवाई जय सिंह की वेधशालाओं के खगोलिय यंत्रो का संक्षिप्त परिचय 7 आधुनिक टेलीस्कोप–परिचय 8 विभिन्न सूर्य गृहण चंद्रगृहण का रेखांकन.

मुख्य ग्रन्थ

1 ज्योतिष का गणित एवं खगोल शास्त्र–विमल प्रसाद जैन 2 खगोल एंव गणितीय ज्योतिष दीपक कपूर 3 तारा भौतिकी डा. निहाल करण सेठी.

सन्दर्भ ग्रन्थ 1 ऋग्वैदिक सूक्त 2 सूर्य सिद्धांत महावीर प्रसाद श्रीवास्तव 3 सूर्य सिद्धांत प्रो. रामचंद्र पाण्डेय 4 गोलाध्याय प्रो. केदारदत्त जोशी 5 श्रीमद्भभागवतपुराण गीता प्रेस 6 आकाश दर्शन गुणाकर मूले 7 The clock in the Night sky Dr. V Krisanamurthy

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1 विज्ञानमानव और ब्रह्मण्ड जयंत वि. नार्लीकर 2 Frontiersof Astronomy:Fred Hoylwe . 4 ब्रह्मण्ड दर्शन छोटू भाई सुथार 5 Astronomy for Astrologers : G C Noonan 6 Astronomy and Mathematical Astronomy: Deepa

(5)

प्रथम सेमेस्टर सत्र 2020–22

102 द्वितीय प्रश्नपत्र : जन्मपत्रिका साधन

102 . Second Paper : Horoscope Delineation

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1. राशि चक व नक्षत्र मंडल का प्रतिनिधित्व करती है जन्म पत्रिका, जन्म पत्रिकाओं के विभिन्न स्वरूप भारत के विभिन्न भागों में जन्म पत्रिका के विविध प्रारूप ,पाश्चात्य जन्म पत्रिका का प्रारूप, इन प्रारूपों की कमी और विशेषता,

2. जन्म पत्रिका निर्माण हेतु इष्ट काल परिभाषा व गणनाा विधियँ:

(क) सूर्योदयास्त के आधार पर (ख) साम्पत्तिक काल के आधार पर.

3. लग्न साधन : परिभाषा व गणना विधियाँ :

1 जन्म इष्ट सूर्य स्पष्ट व लग्न सारिणी से लग्न साधन

2 जन्म इष्ट सूर्य स्पष्ट, पलभा, अयनाशं, चरखण्ड राशि उदय आदि से लग्नानयन

3 साम्पातिक काल (साइडीरियल टाइम) से लग्न स्पष्ट करना.

4. लग्न शुद्धि विधियाँ 1 जन्म पत्रिका में सूर्य की दिशा व भाव की स्थिति से लग्न का स्थूल परीक्षण 2 प्रसूति कक्ष की स्थिति से लग्न शुद्धि की पारंपरिक विधि 3 प्राण पद से 4 गुलिका से उत्तरकालामृत अध्याय एक के अनुसार स्त्री–पुरूष जन्म लग्न परीक्षण. 5

5. विशेष लग्न साधन भाव लग्न, होरा लग्न, घटी लग्न

द्वितीय इकाई

1 दशम भाव साधन : परिभाषा व ध्यान देने योग्य तथ्य (क) साम्पातिक काल आधारित विधि (अधिक प्रचलित) (ख) सूर्य भुक्तांश व दशम सारिणी से (ग) नत काल के आधार पर.

2 द्वादश भाव साधन तथा भाव कुंडली रचना करना

तृतीय इकाई

गृह स्पष्टीकरण : 1 पारम्पारिक पद्धति अनुसार पंचाग की साप्ताहिक प्रातः कालिक ग्रह स्थिति से गोमूत्रिका विधि से 2 पंचांग या एफेमिरिज की दैनिक ग्रह स्थिति के आधार पर लाग्रिथ्मिक टैबिल से 3 वर्ग साधन षडवर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग, षोडशवर्ग साधन, नवमांश व द्रेष्काण साधन की मौखिक गणना विधि सहित 4 राशियों की दृष्टियाँ 5 ग्रहों की तात्कालिक, नैसर्गिक और पंचधा मैत्री की सारिणी बनाना 6 राहू केतु सहित ग्रहों के स्व उच्च नीच मूल त्रिकोण राशि व अंश 7 षड्वल साधन का सैद्धान्तिक परिचय और इनकी उपयोगिता 8 ग्रहों की विविध वर्गो में पारिजात अंश गोपरांश आदि संज्ञाऐं 9 ग्रहों की उच्च मित्रादि आठ स्थितियों से ग्रहों का बलाबल– शुभाशुभत्व निर्धारण.

चतुर्थ इकाई

विंशोत्तरी ग्रह दशा आनयन : 1 नक्षत्र भुक्त–भोग्य विधि से 2 पंचाग या एफेमिरेज के दैनिक चंद्र स्पष्ट से लाग टेबल के आधार पर 3 प्राप्त विन्शोत्तरी भुक्तभोग्य वर्षादि के आधार पर जन्मपत्रिका में विन्शोत्तरी महादशा, प्रत्यंतर दशा लगाना दशा अंर्तदशा की गणना के सरल सूत्र 4 अष्टोत्तरी योगिनि कालचक दशाओं का सैद्धांतिक परिचय 5 ग्रहों का दृष्टि अनुपात.

पंचम इकाई

जन्म पत्रिका निर्माण में प्रयुक्त विविध समय मान : ग्रीनविच समय विश्व समय एफेमिरीस समय, भारतिय मानक समय व स्थानिय समय, भारत का समय मानक क्षेत्र, भारत का युद्ध समय, अंतर–राष्ट्रिय तिथि रेखा, विश्व के 24 समय क्षेत्र, पाश्चात्य ग्रीष्म समय या डे–लाइट सेविंग टाइम, यू. एस. ए. व अन्य पश्चिमी देशों के समय क्षेत्र.

.....

प्रमुख ग्रन्थ

1 सचित्र ज्योतिष शिक्षा (गणित) द्वतिंय खण्ड : बाबूलाल ठाकुर

2 बृहत पाराशर होरा शास्त्र

3 एन. सी.लाहिडि कृत इंडियन एफिमिरिज

4 लाग टेबल

प्रथम सेमेस्टर सत्र 2020–22

103 तृतीय प्रश्नपत्र : सिद्धान्त गणित

103 Third Paper : Siddhant Ganit

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1. ज्यातिष की परिभाषा व विभाग–सिद्धांत, होरा फलित और संहिता, ज्यातिष के आधारभूत बाह्य घटक ग्रह नक्षत्र राशि चक, खगोलिय ज्यामितीय बिंदू यथा लग्न, दशम भाव, पात अर्थात राहु, देश काल इत्यादि ज्योतिष के आतंरिक अदृश्य घटक, कर्म फल, पञच तन्मात्रा मन की प्रवृतियाँ आदि.
2. फलित ज्योतिष का आधार कर्म फल अथवा ग्रह नक्षत्र धर्म ग्रथों और ज्योतिष ग्रथों में कर्मफल प्रधानता के सन्दर्भ.
3. ज्योतिष का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध–ज्योतिष और गणित, भौतिकशास्त्र, आयुर्वेद, वातावरण या संगति मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अंग विद्या, हस्त रेखा व सामुद्रिक शास्त्र, स्वरोदय विज्ञान और योग मार्ग के षडचक
4. ज्योतिष का स्वरूप : वैदिक आत्म विद्या का सहायक, चारों पुरूषार्थ में मार्गदर्शक, ज्योतिष विज्ञान व कला, ज्योतिष के पक्ष विपक्ष में तर्क, ज्योंतिष की वर्तमान दिशा दशा, प्रत्यक्ष वेद परंपरा की स्थिति और नव्याचार इनोवेशन की स्थिति.
5. ज्योतिष का गणित और विज्ञान के विकास में योगदान.
6. ज्योतिष की नई शाखाऐं आर्कियो–एस्ट्रोनोमी, एस्ट्रो जेनेटिक्स आदि.
7. ज्योतिष की खगोल शाखा का मनुष्य की चेतना के विकास में योगदान व्यक्ति केंद्रित विश्व से सामूहिक विश्व चेतना तक.
8. ज्योतिष की वर्तमान दिशा दशा.
   उपरोक्त इन सभी बिंदुओ पर संक्षिप्त समीक्षात्मक टिप्पणी

द्वितीय इकाई

1. काल भेद सृष्टिपरक व कलनात्मक या गणना परक, स्थूल और सूक्ष्म गणनापरक चंद्र और सावन दिन मास वर्ष, दिव्य व मानव वर्ष, युग महायुग, ब्रह्मा का दिनरात, कल्प ब्रह्मा–आयुष आदि सहित सम्पूर्ण मध्यमाधिकार अध्याय (अहर्गण साधन को छोड कर) .

2. नवविधि कालमान इत्यादि सहित सम्पूर्ण मानाध्याय.

तृतीय इकाई

1. सूर्य सिद्धांत मध्यमाधिकार से अर्हगण साधन 2. ग्रह लाघव से अहर्गण साधन

चतुर्थ इकाई

(क) 1. सूर्य सिद्धांत के अयनांश साधन 2. ग्रह लाघव से अयनांश साधन 3. मकरंदीय आयनांश साधन 4. आयनोश की ईस्वी सन आधारित विधि 5. प्रचलित चित्रपक्ष अयनांश की समीक्षा और इसका वार्षिक अयन अंश मान

(ख) अयन चलन विमर्श : शंकर बालकृष्ण दिक्षित कृत विवेचन (भारतिय ज्योतिष गणित खण्ड) अयनांश का पक्ष विपक्ष.

पंचम इकाई

1. नक्षत्र व उनके योग ताराओ के निर्धारण पर मतभेद का विवेचन (शं.बा. दिक्षित कृत भारतिय ज्योतिष का सिद्धांत काल द्वितिय प्रकरण पृष्ठ 587–609)
2. ग्रह युति अधिकार, नक्षत्र युति अधिकार, उदयास्त अधिकार (सूर्य सिद्धांत)

मुख्य ग्रन्थ

1. सूर्य सिद्धांत
2. भारतिय ज्योतिष : शंकर बाल कृष्ण दीक्षित, अनुवादकर्ता शिवनाथ झारखंडी, हिंदि समिति उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ
3. भारतिय ज्योतिष का इतिहास : डॉ गोरख प्रसाद

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भारत सरकार के कैलेण्डर रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट (सी. आई एस. आर. देहली)
2. पंचांग सुधार पर भारत सरकार के राष्ट्रीय वार्षिक पंचांगों में वक्तव्य
3. काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी का पंचांग सुधार प्रतिवेदन वर्ष 2011–2012
4. पंचांग विषेशांक अप्रैल 2010 : सर्वमंगला मासिक ज्योतिष पत्रिका इन्दौर
5. एन. सी. लाहिडी कृत इन्डियन एफेमिरिज
6. सयन पद्धति का श्री मोहन कृत आर्ष तिथि पत्रक ग्रेटर नोयडा 2013
7. पंचांग संशोधन आलेखः श्रीकृष्ण यूनिवर्सल विश्व पंचांग : अवतार कृष्ण कौल 1997 ईस्वी दिल्ली

(9)

प्रथम सेमेस्टर सत्र 2020–22

104 चतुर्थ प्रश्नपत्र : ज्योतिष का इतिहास

104 Fourth Paper : History of Jyotish

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

ज्योतिष की महत्ता व प्रारम्भिक तथ्य, वेद उपनिषदों में खगोल ज्योतिषिय सन्दर्भ, काल गणना और ज्योतिषिय शब्दावली (अध्याय 1–2,3–4)

द्वितीय इकाई

वेदांग ज्योतिष वेदों कों का काल वेदांग काल महाभारत में ज्योतिषीय सन्दर्भ (अध्याय 5–6–7)

तृतीय इकाई

1. आर्यभट्ट व उनका आर्यभटीय वराहमिहिर व उनका पञ्च सिद्धान्तिका ग्रन्थ भास्कराचार्य द्वितिय व उनका सिद्धांत सिरोमणी.
2. बृह्मगुप्त व उनके प्रमुख ग्रन्थ मुंजाल, श्री पति, मकरंद गणेश दैवज्ञ कमलाकर पर संक्षिप्त टिप्पणियां (अध्याय 8–9,13–14)

चतुर्थ इकाई

1. सूर्य सिद्धांत (अध्याय 11) भारतिय और यवन ज्योतिष (अध्याय 12) जयसिंह और उनकी वेदशालाओं का संक्षिप्त परिचय (अध्याय 16)

पंचम इकाई

1. भारतिय पंचांग : पंचांग निर्माण के सौर, चंद्र, और मिश्रित सौर चंद्र तीन प्रमुख प्रकार के सिद्धांत और इनकी विषेशताऐ, भारतिय पंचांगो का प्रकार, पंचांग के प्रमुख पाँच अंगो का सामान्य परिचय (अध्याय 18 भारतिय पंचांग)
2. पंचांगो में मतभेदों की समस्या तिथी के अधिकतम न्यूनतम मान की गणना में गणितिय व सैद्धांतिक मतभेद, धर्मग्रन्थ धर्म सम्प्रदाय संबंधी मतभेद, गुरू शुक्र के उदयास्त सिद्धांत में एकरूपता का अभाव वृत पर्व की परिभाषा में धर्म शासत्रिय व धर्म–सम्प्रदायीएकरूपता का अभाव वर्ष आरम्भ पर मतभेद इत्यादि की धार्मिक और समाज शासत्रिय विवेचना.
3. पंचांग संशोधन पर विचार की आवश्यकता वर्षमान वर्तमान ग्रह लाघवीयगणित की अशुद्धि, तर्क इतिहास धर्मशास्त्र मौसम कृषि वर्षआरम्भ, सायन निरयन पक्ष व्यवहारिकता इत्यादि के सन्दर्भ में पंचांग संशोधन पर शंकर बालकृष्ण दीक्षित की विवेचना एवं (भारतिय ज्योतिष स्पष्टअधिकारअध्याय) आधुनिक मत.

टिप्पणी : इस प्रश्न पत्र की इकाइयों में दर्शित अध्याय संख्या मुख्यत : डॉ. गोरख प्रसाद कृत भारतिय ज्योतिष का इतिहास ग्रन्थ से उदित है.

मुख्य ग्रन्थ

1. भारतिय ज्योतिष का इतिहास : डॉ. गोरख प्रसाद प्रकाशन व्यूरों उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ
2. भारतिय ज्योतिष शंकर बालकृष्ण दीक्षित, अनुवादकर्ता शिवनाथ झारखण्डी, हिन्दी समिति उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ
3.

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भारत सरकार के कैलेन्डर रिफार्म की रिपोर्ट (सी. एस. आई. आर देहली)
2. पंचांग सुधार पर भारत सारकार के राष्ट्रीय वार्षिक पंचांगों में वक्तव्य
3. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी का पंचांग सुधार पर प्रतिवेदन वर्ष 2011–2012
4. पंचांग विषेशांक अप्रैल 2010 सर्वमंगला मासिक ज्योतिष पत्रिका इंदौर
5. सायन पद्धति का वार्षिक श्री मोहन कृति आर्ष तिथी पत्रक ग्रेटर नोयडा 2013
6. एन. सी. लाहिडी कृत वार्षिक इन्डियन एफेमिरिज

(11)

द्वितीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

201 प्रथम प्रश्न पत्र : होरा ज्योतिष – प्रथम

201,First Paper : Hora Jyotish First

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1– ग्रह गुण अध्याय (बृहत पाराशर होरा शात्र) तथा उत्तरकालामृत का ग्रह विषेशताएं अध्याय 5

द्वितीय इकाई

1– वर्गो की किंशुक पारिजात इत्यादि संज्ञाएँ (अध्याय 7), 2– वर्ग विवेचन (अध्याय 8) 3– राशि दृष्टि (अध्याय 9) 3. अरिश्ट, अरिश्ट भंग (अध्याय 10–11)

तृतीय इकाई

1– द्वादश भाव विवेक (अध्याय 12) तथा उत्तर कालागृत अध्याय पंचम की 12 भावों से विचारणीय बाते,
2– लग्न भाव फल से तृतीय भाव फल तक (अध्याय 16–17–18)

चतुर्थ इकाई

चतुर्थ भाव फल से सप्तम भाव फल तक (अध्याय 16 से 19 तक)

पंचम इकाई

अष्टम भाव फल से द्वादश भाव फल तक (अध्याय 20 से 26 तक)

टिप्पणी : इस प्रश्न पत्र की मुख्य पुस्तक बृहत पाराशर होरा शास्त्र है इकाई में दर्शित विभाजन और अध्याय इसी के है जहॉ अन्य पुस्तक से भी सामग्री ली गयी है वहॉ अन्य पुस्तक का उल्लेख किया गया है ।

.....

मुख्य ग्रन्थ

1– बृहत पाराशर शास्त्र : डॉ. सुरेशचंद्र मिश्र ।
2– उत्तर कालामृतःजगन्नाथ भसीन की टीका ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1– ज्योतिश ग्रह योगो से देखे – शिक्षा सर्विस और व्यवसाय डॉ. पुश्पा चौहान सुशमा सहित्य मंदिर 665, गोलबाजार जबलपुर ।
2– ज्योतिश तत्वविवके : पंडित रमेश उपाध्याय, पीताम्बरा पीठ दतिया (म.प्र.)

(12)

द्वितीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

202 द्वितीय प्रश्न पत्र : मुहूर्त एवं व्रत पर्व

202, Second Paper : Muhurta and Festivals

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

(क) 1. मुहूर्त की सामान्य परिभाशा, उद्देश्य विस्तार एवं सीमाएं
2. तिथियों की नदादि संज्ञा, स्वामी,
3. तिथि एवं वार के संयोग से बने योग,
4. नक्षत्र एवं वार के संयोग से बने योग,
5. तिथ्वार नक्षत्र से बने निंदनीय योग,
6. कार्य भेद से सिद्धि योग,
7. आनंद आदि 28, योग,
8. वार व नक्षत्र परक सर्वार्थ सिद्धि योग,
9. अशुभ योगों का परिहार,
10. रवि चंद्र परक योग,
11. भद्र की विथियों में स्थिति तथा परिहार,
12. समस्य कार्यो में वर्जनीय पञ्चांग दोश,
(शुभाशुभ प्रकरण : मुहूर्त चिंतामणि)

(ख) सूर्य की 12 संक्रांतियों मो विशुव, अयन, विश्णुपदी, षडशीत संज्ञाएं, एंक्रांति पुण्य काल,

(ग) नक्षत्र : नक्षत्रों के वैदिक स्वामी, नक्षत्रों की विविध संज्ञाएँ और इनमें प्रशस्त कार्य : 1. ध्रुवादि, 2. अधोमुख, 3. ऊध्वे मुख, 4. विर्यक मुख, 5. अंध–मंदाक्ष, 6. मूल, 7. अभुक्त मूल, 8. गंडांत, 9. पंचक,

द्वितीय इकाई

प्रमुख मुहूर्त (मुख्यतः केवल नक्षत्र विचार)

1. पौध रोपण, 2. बीज वपन, 3, औशधि, 4. शल्य क्रिया तथा विरेचन आदि क्रिया, 5. क्रय–विक्रय, दुकान, व्यवहार, नौकरी,
6. मैंत्री सीधे व्यापारिक प्रसंविदा (एग्रीमेट) 7. धन, कर्ज, लेनदेन, 8. अग्निहोत्र, 9. जलाशय, 10. देवप्रतिश्ठा, 10. ग्रह आरम्भ
11. गृह प्रवेश ।

तृतीय इकाई

1– गुरु शुक्र अस्त आदि में वर्जनीय कार्य, गुरु का सिंहस्थ, वक्र अतिचारी दोश परिहार,

2– विविध संस्कार मुहूर्त,

1. गर्भाधान, 2. सीमन्त उन्नयन, 3. पुंसगन, 4. जार्तकर्म नामकरन, प्रसुति स्नान, अन्नप्राशन, भूम्युपवेशन कर्ण वेध, मुड विद्या आरम्भ उपनयन विवाह– कन्यावरण वर वरण, गुरुचंद्र रवि शुद्धि विचार, गोचर शुभाशुभ विचार में अश्टक विच से निर्णय, मास विचार नक्षत्र तथा लग्न विचार, पञ्चशलाका वेध, जामित्र दोश, लग्न शुद्धि एवं प्रशस्त, नवमांश विवाह लग्न से शुभाशुभ ग्रह चार एवं ग्रह मुहूर्त दोश का परिहार, दोश परिहारों में ग्रहोको प्रधानता मान्धर्व विवाह में त्रिपदी नक्षत्र चक्र ।

चतुर्थ इकाई

व्रत अत्सव पर्वादि निर्णय

1– धर्म कृत्य में प्रयुक्त प्रमुख काल विभाजन : दिन के तीन विभाग प्रातः मध्याहन सायं दिन के चर विभाग, दिन के पाूच विभाग इत्यादि की परिभाशा एवं समय मान,

अन्य विभाग, प्रदोश काल, निशील काल, प्रातः मध्याहन सायं संध्या, मुहूर्त अदि समस्य काल विभाग का मान, राहुकालादि, व अन्य प्रकार से वर्जित समय,
2– तिथि भेद : शुद्धा पर–विद्धा, पूर्व विद्धा पूर विद्धा पूर्ण खंडा इत्यादि चंद्रोदय व्यापिनी पूर्णिमा सूर्योदय व्यापिनी पूर्णिमा सिनी, कुहू दर्श अमावस्या आदि विभिन्न तिथियों की परिभाशा,
3– चांद्र मास की तिथियों पर आधारित व्रत, धर्म कृत्य आदि के निर्णय के सामान्य सिद्धांत (जैसे गणेश चतर्थी कृश्ण पक्ष में चंद्रोदय व्यापिनी और शुल्क पक्ष में गणेश चतुर्थ का निर्णय मध्य व्यापिन से किया जाता है इत्यादि)
4– व्रत उत्सव पर्व धर्म कृत्य के समय निर्धारण में मतभेद के प्रमुख कारणों की विवेचना
(क) शास्त्रों में मतान्तर
(ख) लो परंपरा में अंतर
(ग) निर्दिश्ट काल खान की परिभाशा में अंतर जैसे प्रदोश काल का मान 2 घटी या 3 घटी,
(घ) निम्बार्क वल्लभ आदि संप्रदाय धर्मआचायों में व्रत में तिथि की ग्राहयता पर स्थायी मतभेद,
(ड़) पञ्चांग के तिथि मान गणना में स्थायी गणितीय मतभेद,
(च) स्थानीय या भौगालिक कारण से विविधता,

पंचम इकाई

प्रमुख व्रत उत्सव पर्व धर्मकृत्य की तिथि निर्णय के धर्मशास्त्रीय नियम :
1. जन्मोत्सव, 2. विवाह वर्शगांठ, 3. मरण तिथि, 4. श्राद्ध तिथि, 5. मकर सक्रांति, 6. वसंत पंचमी, 7. महाशिवरात्रि, 8. होलिका दहन, 9. भाई दूज यमद्वितीया चित्रगुप्त पूजन द्वितीया, 10. वर्श प्रतिपदा, नव रा. कलश स्थापन, 11. नवरात्र की अश्टमी नवमी, 12. श्रीराम नवमी, 13. अक्षय नवमी, 14. बुद्ध पूर्णिमा, 15. वटसावित्री व्रत, 16. गुरु पौर्णिमा, 17. रक्षा बंधन पौर्णिमा, 18. भाई दूज, 19 श्रीकृश्ण जन्माश्टमी, 20. हस्तालिका तीज, 21. गणेश चतुर्थीख 22. महालक्ष्मी व्रत आरम्भ, 23. अनंत चतुर्दशी, 24. हल षश्टी, 25. संतान सप्तमी, 26. महालय पितृ पक्ष श्राद्धतिथि व श्राद्ध आदि हेतु दिन का विहित कालखंड, 27. विजयादशमी, 28. शरत पूर्णिमा, 29. करक चतुर्थी, 30. धनत्रयोदशी, 31. श्री हनुमान जयन्ती, 32. दीपावली पूजन की अमावस्या, 32. गोवर्धन पूजा, 33 ईस्टर, 34. गुड फाइडे, 35. ईद, 36. एकादशी प्रदोश नवरात्र आदि के परण का निर्णय ।

प्रमुख ग्रन्थ
1– व्रत परिचय : हनुमान शर्मा गीता प्रेस ।
सन्दर्भ ग्रन्थ
1– धर्म सिंधु,
2– निर्णय सिंधु,
3– व्रत राज,
4– स्व धर्मामृत सिंधु,
5– व्रत पर्व विवेक मार्तण्ड पञ्चांग प्रकाशन ।

(14)

द्वितीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

203 – तृतीय प्रश्नपत्र – संहिता भाग –1

203 Third Paper : Sahita Bhag -1

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

1– सांवत्सरसूत्राध्याय से आदित्यचाराध्याय तक ।
2– चन्द्रचार से बृहस्पतिचाराध्याय तक ।
3– शुक्रचार से केतुचाराध्याय तक ।
4– सप्तर्विचार, राशिग्रहसमागम, शकुन, शकुनोत्तराध्याय ।
5– नक्षत्रशीलाध्याय एवं ग्रहगोचराध्याय ।
भद्रबाहुसंहिता का स्वप्नाध्याय ।

प्रमुख ग्रन्थ :–

1– बृहत्संहिता (वराहः) प्रथम, द्वितीय ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1– अदसूत सागर (बल्ताल)
2– भद्रबाहु संहिता ।
3– नारद संहिता ।

(15)

द्वितीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

204 चतुर्थ प्रश्न पत्र : वास्तु

204, Fourth Paper : Vaastu

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

(क) 1. पञ्च तत्वों का समन्वय और वास्तु, 2. वास्तु का क्षेत्र, 3. पर्यावरण और वास्तु, 4. वास्तु पुरुश की संकल्पना, 5. वास्तु का ज्योतिश से सम्बन्ध, 6. प्रसूती समय की जन्म लग्न से प्रसूति कक्ष और उसके पर्यावरण का आकलन तथा, 7. जन्म समय के वास्तु पर्यावरण से जन्म लग्नादि का अनुमान, 8. वास्तु शास्त्र का इतिहास (वास्तु अरविन्द) ।
(ख) गृह आरंभ विचारणीय तथ्य : 1. ग्राम वारा विचार की विविध विधियॉ, 2. दिशा विचार, 3. भूमि विचार, 4. प्लव गज पृश्ट आदि विचार, 5. भू परीक्षण, 6. शुद्धि, 7. दिशा शोधन, 8. रास्ता और वीशी शूल (वास्तु अरविन्द अध्याय 4–4क ।

द्वितीय इकाई

1. शल्य उद्धार व इसमें अहिबल चक्र का उपयोग. गृह पिंड आनयन, 2. गृह पिंड से आय अंश आदि आनयन पिंड से मंडल आनयन ऑगन. ऑगन विचार, गृह की ऊँचाई, पारम्परिक दृश्टि से गृह में विभिन्न कक्षों के निर्माण की दिशा विदिशा आदि. वास्तु में कूप–आधुनिक नल कूप की दिशा (मुहूर्त चिंतामणि 12/20)

तृतीय इकाई

1– द्वार प्रकरण सम्पूर्ण अध्याय,
2– दक्षिण दिशा द्वार पर अनसामान्य की भ्रान्ति का वास्तु शास्त्र आधार पर चित्रांकन व प्रमाण सहित निवारण,
3– चौसठ पद वास्तु व इक्यासी पद वास्तु पद मंडल का आनयन, इन मंडलो के विभिन्न पदों के देवता, चारों दिशाओं में प्रशस्त पदों का रेखांकन व इसका व्यावहारिक ज्ञान, उद्देश्य भेद से वास्तु पद मंडल का चयन,

चतुर्थ इकाई

1– दिशाओं विदिशाओं का अंशात्मक दृश्टि से 4,8,12,16,24, विभाजन तथा इनके मध्य भाग का निर्धारण 2 आधुनिक मत से भवन के अंतर्वर्ती स्थानों में रसोई, बैठक, शयन कक्ष ध्यान, अध्ययन कक्ष आदि के निर्माण के प्रशस्त दिशा आदि विभिन्न कक्षों पर वास्तु के निर्देश,
2– व्यावसायिक वास्तु : भवन की मुख्य दिशा, स्वामी, कर्मचारी, आगंतुक के कक्ष की स्थिति,
3– औद्योगिक वास्तु द्वार दिशा संयंत्र, कर्म शाला, अपशिश्ट निकास, भण्डार, उत्पाद, निकास कक्ष व दिशा इत्यादि का वास्तु परक सुझाव,

पंचम इकाई

1– अष्टक वर्ग के आधार पर भवन निर्माण में विभिन्न प्रकोश्ठों का निर्माण व उपयोग (जताकदेश मार्ग, अश्टक वर्ग प्रकरण अनुसार)
2– गृह निर्माण आरम्भ की मुहूर्तः मास, पक्ष वार तिथि नक्षत्र लग्न आदि का शुद्धि,
3– वृश वास्तु चक्र, सप्त शलाका वेध, भूमि सुप्ति विचार, कुम्भ चक्र विचार और वाम रवि विचार,
4– वास्तु की आयु का विचार,
5– भवन के निकट प्रशस्त वृक्ष के वास्तु निर्देश,

मुख्य ग्रन्थ :–

1– वास्तु रत्नाकर : विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा,

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1– समरांगन सूत्र धार,
2– मय मतम्,
3– बृहत संहिता,
4– वास्तु शास्त्र रहस्यः पंडित के एल. शर्मा,
5– अक्षय, वास्तु अरविन्द : अरविंद, वझे एडवोकेट मुम्बई,
6– रेमेडियल वास्तु : डा. भोजराज द्विवेदी,
7– वास्तु रहस्य विशेशांक जुलाई 2011 : सर्व मंगला ज्योतिश मासिक पत्रिका इंदौर,
8– विविध वास्तु विशेशांक फ्यूचर समाचार दिल्ली,
9– विज्ञान भारती प्रदीपिका 1996, वास्तु शास्त्र पर रिसर्च जर्नल, जबलपुर,
10– प्रिसिप्ल्स आफ वास्तु शास्त्र भवन प्लान सहित : प्रोफेसर वी.वी. रामन,
11– प्रैक्टिकल वास्तु वास्तु शिल्पी बी.एन. रेड्डी, हैदराबाद,
12– बृहत वास्तु माला पंडित राम निहोर द्विवेदी, चौखम्बा वाराणसी,

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

301 प्रथम प्रश्न पत्र : होरा ज्योतिष –– द्वितिय

301,First Paper : Hora Jyotish Second

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1– फावेश फल–1 बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 25

द्वितीय इकाई

2– भावेश फल–2 बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 25

तृतीय इकाई

पद बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 27
उप–पद बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 28
अर्गला बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 29
चर स्थिर कारक बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 30

चतुर्थ इकाई

1– कारकांश फल बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 31

पंचम इकाई

1– द्वादश लग्नों के योग कारक ग्रह, बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 32 तथा
2– पंडित राम यत्न ओझा कृत फलित विकास ग्रन्थ से नवम दशम विचार एवं सम्बन्ध विचार पृश्ठ 130'131
3– पञ्च महाभूत फल बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 78
4– सत्वादि गुण फल बृहत पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 79

मुख्य ग्रन्थ :–

1– बृहत पाराशर होरा शास्त्र
2– फलित विकास : पंडित रामयत्न ओझा

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

302 द्वितीय प्रश्नपत्र : संहिता भाग –2

302 Sahita Bhag -2

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

1– बृहत्संहिता का उदकार्गलाध्याय ।
2– बृहत्संहिता का प्रासादलक्षणाध्याय, वृक्षायुर्वेदाध्याय ।
3– बृहत्संहिता का भूकम्पात्पाताध्याय, उत्कालक्षणाध्याय ।
4– बृहत्संहिता का परिवेशलक्षणाध्याय, दिग्दाहलक्षणाध्याय ।
5– बृहत्संहिता का ग्रहयुद्धाध्याय, भद्रबाहु संहिता का शुभाशुभोत्पातलक्षणाध्याय ।

प्रमुख ग्रन्थ :–

1– बृहत्संहिता (वराह) – पं. सीताराम झा
2– बृहत्संहिता (वराह) – सुरेश चन्द्र मिश्र
3– भद्रबाहु संहिता – नेमिचन्द्र शास्त्री

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1– नारद संहिता – नारद
2– वर्ग संहिता – गर्ग ।

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

303 तृतीय प्रश्न पत्र : चिकित्सा ज्योतिष

303 Third Paper : Medical Astrology

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1– (ज्योतिश और आयुर्वेद का सम्बन्ध : आयुर्वेदिक दिनचर्या ऋतुचयों ऋतुसंधि ज्योतिष के काल विभाजन अनुसार वाग्भट कृत अष्टांग संग्रह चतुर्थ अध्याय श्लोक 1 से 8 व 61) रोग और आरोग्य के 3 कारणों में मालका एक कारण (अष्टांग से अध्याय 1 श्लोक 42–43)
2–आयुर्वेद शरीर व रोग (सुश्रुत संहिता शरीर स्थानम् अध्याय –1 और 4. सूत्र स्थानम् अ.–24)
3– आयुर्वेद के अनुसार पन्च महाभूतों के लक्षण व कार्य :
4– मुल प्रकृति एवं इन्द्रियों की उत्पति का विचार, ज्ञान इन्द्रियां कव कर्म इन्द्रियों और उनकी शरीर में स्थिति।
5–तन्मात्रा पजच महाभूतों की व्युत्पति ।
6–ज्ञनेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों के कार्य, चिकित्सा उपयोगी पंचभतात्मक जीवात्मा ।
7– आत्मा व कर्मपुरुष के गुण ।
8–सात्विक राजसिक व तामसिक के गुण ।
9– पन्चभूतों व त्रिगुणों में सम्बन्ध ।
10–वात पित्त कफ प्रकृति व्यक्तियों के लक्षण ।
11–रोगोत्पति में बात पित कफ की भूमिका ।
12– तीन प्रकार के दुखों के आधार पर रोगों का (आदि बल प्रबृत, दोश बल प्रवृत्त इत्यादि) सात प्रकार से वर्गीकरण ।
(उपरोक्त 20 से 29 तक का सन्दर्भ सुश्रुत संहिता शरीर स्थानम् अध्याय –1 और 4. सूत्र स्थानम् अ. –24)
13 ग्रह की पन्च महाभूतात्मक और सात्विक राजसिक तामसिक प्रकृति का व्यक्तित्व व मनोवृत्ति पर प्रभाव (बृहत पराशर, पजच महाभूत फल अध्याय और सत्व गुणादि अध्याय, ग्रहों क त्रिगुणात्मक प्रवृत्ति बृहत्जातक अ 2/7 एवं सारावली अ. 38 गुण तत्व फलाध्याय)
चिकित्सा के सोलह अंग एवं श्रेष्ठ चिकित्सक के गुण निर्धनसेवा व दया (अश्टांग से सूत्र स्थानम् अ.2 श्लोक22 से 25 और श्लोक 37–38)
चिकित्सा में प्रतिकूल ग्रहयोग (अश्टांग से, शरीर स्थानम् अ. 22 श्लोक 14), 27 नक्षत्र अनुसार रोग शासन की समयावधि (अश्टांग से, निदान स्थानम् अ.1, श्लोक 21 से 32 तक)

द्वितिय इकाई

पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान अनुसार शरीर की प्रणालियों (सिस्टम्स) व अंगों का, प्रत्येक पर लगभग 50 शब्दों से 250 शब्दो तक लिखने योग्य, संक्षिप्त टिप्पणीं या सामान्य परिचय :
(क) 1. परिसचरण तंत्र, 2. हदय, 3. हदय चक्र, 4. हदय रोध व हदय निकास 5 रक्त का परिसंचरण, 6. आवरण शोध, 7. अन्तहदय शोध, 8. कारोनरी धमनी रोग, 9. मूच्छों, 10. रक्त संकुल हदय पात, 11. हदय संरोध, 12. हदय सर्जरी,
(ख) 1. रक्त की संरचना, 2. हीमोग्लोबिन श्वेत रक्त कोशिकाएं एवं रक्त के वर्ग, 3. रक्त के कार्य, 4. रक्त चाप , 5 अरक्ता, 6. हीमोफिलिया, अति रक्तदाब और अल्प रक्तदाब,
(ग) 1. आमाशय के कार्य, 2. जठर के कार्य, 3. छोटी आंत के कार्य, 4. बड़ी आंत के कार्य, 5. यकृत, 6. पिताशय, 7. अग्न्याशय, 8. पाचन नाल के कुछ रोग ।

(घ) 1. श्वसन मार्ग का संक्षिप्त परिचय, 2. फुफ्फुस के कार्य,
(ड) वाहिनी विहीन ग्रंथियों
(च) 1 मुत्र जनन तंत्र संरचना, 2. मूत्र पथ के अंग और वृक्क के कार्य
(छ) 1. केन्द्रीय प्रमस्तिष्क मेरु तंत्रिका तंत्र, 2. स्वचालित तंत्र अनुकंपी और परानुकम्पी तंत्र सहित,
(ज) 1. गर्भाशय, 2. डिम्ब ग्रंथि, 3. वृशण, 4. पुरस्थ ग्रथि, 5. क्रोमोसोम,

तृतीय इकाई

(क) 1. काल पुरुष की अवधारणा, राशि चक्र एवं बारह भावों का काल पुरुश की शरीर रंचना से सम्बन्ध, 2. सत्ताईस नक्षत्रों का शरीर के अंगों से सम्बन्ध (बृहत पाराशर. प्रश्न विचार अध्याय श्लोक 38,39,51) 3. द्रेष्काण और शरीर की अंग, 4. राशियों का अग्नि जल आदि तत्वों के अनुसार एवं वर आदि अनुसार शरीर अंगों पर अधिपत्य ।
(ख) 1. राशियों व रोग, 2. ग्रह व रोग, 3. नक्षत्र व रोग (बृहत पाराशर षश्ठ भाव फलाध्याय फलदीपिका अ 14 जातक पारिजात तथा गदावली अ.1) 3. ग्रह का राशि स्थिति अनुसार रोग, 4. नक्षत्र व शरीर के अंग और रोग ।

चतुर्थ इकाई

(क) 1. रोग निदान (डायग्नोसिस) के आधारभूत सिद्धांत तथा इनका व्यावहारिक उपयोग
लग्न षष्ठम अष्टम द्वादश द्वितीय सप्तम भाव, भावेश भावस्थ ग्रह इनसे संबंद्ध ग्रह, नक्षत्र व नक्षत्र में स्थित ग्रह.
क्रूर ग्रह की भूमिका, निर्बल ग्रह की भूमिका, मारक ग्रह की भूमिका, क्रूर षष्ट्यांश की भूमिका, आयुर्दाय की भूमिका ।
(क) त्रिदोषों के सन्दर्भ में ग्रहों की रोग निदान में भूमिका, तथा (ख) ज्योतिश शास्त्र में रोग विचार ग्रन्थ के अध्याय छः में वर्णित त्रिदोषो के ग्रह योगों में से चुने हुए कुल 12 प्रमुखग्रह योग का संक्षिप्त विवेचन ।
अनुवांशिकी और रोग,
षडचक्रों के आधार पर रोग निदान,
कृष्णमूर्ती पद्धति से षष्ट उप भावेश से रोग निदान,
(ख) 1.रोगों का सहज रोग और आगंतुक रोग के आधार पर पुनः वर्गीकरण इसके अंतर्गत केवल चोट दुर्घटना से विकलांगता के ग्रह योगों का संक्षिप्त विवेचन,
रोगों की साध्यता और असाध्यता 3. रोग उत्पत्ति के संभावित समय निर्धारण में विन्शोत्तरी दशा–अंतर्दशा की भूमिका, गोचर की भूमिका,
षष्ठ भाव में क्रूर ग्रह की स्थिति का (बृहत् पाराशर अ. 18 श्लोक 12–13) एवं शुभ ग्रह की स्थिति का रागों पर प्रभाव का विवेचन,
..... राशि पर दृष्टि, राशिगत भाव के जीव तत्व को हानिप्रद, नाडी ग्रन्थ के इस सिद्धांत का परीक्षण,

पंचम इकाई

निम्नांकित रोगो के सामान्य :– 1. चिकित्सा शास्त्रीय कारण व लक्षण, 2. आयुर्वेदिक कारण व लक्षण का वर्णन और 3. ज्योतिश विज्ञान के अनुसार इन रोगों के ग्रहयोग का वर्णन एवं जन्म पत्रिका में इन रोगों की पहिचान का, व्यावहारिक अध्ययन : 1. रक्त चाप, 2. हदय रोग, 3. मधुमेह, 4. कैंसर, 5. दमा, 6. गठिया, 7. अवसाद,

2. रोगोपचार

विंशोत्तरी दशान्तार्दशा अनुसार रोगकारक ग्रह की शांति हेतु मंत्र व दान निर्णय
जडी प्राशचित कर्म, हवन समिधा निर्धारण,

रोग–शमन, ग्रह वस्तु–दान से होगा या ग्रह–रक्त धारण से, इसके विभिन्न मत–मतान्तरों का संक्षिप्त विवेचन,
षड चक्रों पर ध्यान से रोग निवारण,

.....

मुख्य ग्रन्थ :–

1. सुश्रुत संहिता , 2. वारभट कृत अष्टांग संग्रह, 3, बृहत पराशर होरा शास्त्र, 4. फलदीपिका, 5. जातक पारिजात, 6. ज्योतिष में रोग विचार.प्रों. शुकदेव चतुर्वेदी, 7. वीरसिंहावलोक, 8. मेडीकल एस्ट्रोलोजीः राफेल, 9. गदावली, 10. शरीर और शरीर क्रिया विज्ञान ईब्लिंग पीयर्स कृत (हिन्दी), 11. बृहत जातक, 12. सारावली, 13. ज्योतिष और रोग,.....

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. चिकित्सा ज्योतिष के व्यावहारिक अनुभव : एम.एस. श्रीवास्तव 104 अंसल प्रधान एन्क्लेव, ई–8 अरेरा कॉलोनी भोपाल,
2. उपचारीय ज्योतिष कौमुदी : के.के. पाठक, एल्फा पब्लिकेशन दिल्ली,
3- Steller Healing Through Gems by NN Saha,
4- Astrology bu Jagannath Rao,
5- Scott Cunnigham's Encyclopaedia of Crystal

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22
304 चतुर्थ प्रश्न पत्र : स्त्री एवं बाल जातक
304, Female and Child Horoscopy

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई
स्त्री जातक : 1– बृहत पराशरी अध्याय 83, 2– फल दीपिका गो.कु. ओझा कृत टीका अध्याय 11, 3– कलत्रभाव विचार–फलदीपिका अध्याय 10, तथा 4– त्रिफला ग्रन्थ के वेडो जातक के स्त्रीजातक अध्याय के श्लोक 1 से 18 तक,

द्वितीय इकाई
निशेक प्रकरण, गर्भस्य शिशु को स्वास्थ्य : गर्भ संकेतक योग, पुत्र पुत्री योग, जुडवां संतति योग, द्वादशांश आदि से प्रसूति तिथि का अनुमान, पाश्चात्य विधि से गत मासिक चक्र, ठहराव की तिथि (लास्ट मेंस.पाज) और व्यक्तिगत मासिक चक्र की दिनावधि के आधार पर अपेक्षित प्रसूति दिनांक (ई.डी. डी.) का अनुमान, गर्भ मासों पर ग्रह–प्रभावः गर्भिणी माता का स्वास्थ्य–बृहत जातक निशेक अध्याय अध्याय 4: जातक का देशमार्ग अध्याय 2 का निशेक प्रकरण,

तृतीय इकाई
पुत्र भाव फल विचार–फलदीपिका बारहवां अध्याय : पुत्र चिंता व संतान चिंता प्रकरण जातक देश मार्ग अध्याय 15 एवं 16 : तथा संतान शाप विचार–बृहत पाराशर होरा, अध्याय 86,

चतुर्थ इकाई
1– बालरिष्ट विचार बृहत पराशरहोरा अध्याय 10: जाताकादेश मार्ग अध्याय 3 तथा सारावली, अध्याय 10,
2– अरिष्ट भंग विचार बृहत पाराशर होरा अध्याय 11: अरष्टि भंग विचार : सारावली अध्याय 11: एवं जातकादेश मार्ग अध्याय 4,

पंचम इकाई
1– वर कन्या को जन्म पत्रिका में कलत्र दोश विचार, कन्या की जन्म पत्रिका में मांगल्य (सौभाग्य) विचार, वर कन्या की पत्रिका में सप्तम, और अनय भाव, कारक ग्रह, गुरु शुक्र आदि विचार, दाम्पत्य सुख न्यूवता, वैधव्य, सौभाग्य योग विचार,
2– विवाह–मेलापक में अष्ट कूट विचार, अष्टकूट दोष परिहार नियम,
3– विवाह मेलापक में कुज दोष विचार, मंगल शनि राहू केतु और सूर्य इन क्रूर ग्रहों के दोष से तात्पर्य व सामान्य नियम, भाव स्थिती अनुसार दोष की न्यूनाधिकता का क्रम, कुज दोष के अपवाद व इन अपवादों की विवेचना, मंगल की राशिविशेश में स्थिती से कुज दोष परिहार की विवेचना,

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22
305 पंचम प्रश्नपत्र – वाणिज्य ज्योतिष
305 Fifth Paper :

1– ग्रहो नक्षत्रों राशियों के द्रव्य पदार्थ तथा वाणिज्य विषय (व्यापार रत्न प्रथम खण्ड का तीसरा प्रकरण । उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड । बृहतसंहिता नक्षत्र व्यूहाध्याय)

2– नक्षत्रों तथा राशियों पर ग्रहों के संचार उदयास्त वक्री मार्गी आदि का तेजी मन्दीकारक प्रभाव (व्यापार रत्न प्रथम खण्ड छठा प्रकरण ।

3– (1) संहिता के दृष्टिकोण विषयों पर अनादी वस्तुओं के उत्पादन आदि पर द्रव्य पदार्थो आदि पर ग्रह संचार का प्रभाव (बृहत्संहिता आदित्याचार से शनिचार अध्याय तक सभी नौ ग्रह)

(2) सर्वतोभद्र चक्र से आधार पर वाणिज्यक वस्तुओं की तेजी मन्दी ज्ञान के सिद्धान्त ।

4– पाश्चात्यज्योतिष पद्धति के आधार पर वाणिज्य वस्तुओं की तेजी मन्दी का आंकलन ।

(1) ग्रहों राशियों की तेजी मन्दी कारक (क) सामान्य प्रकृति (ख) परस्पर अशात्मक दृष्टियॉ ।

(2) ग्रहों की युति, क्रान्तीयाम्य तथा शर परिवर्तन का बाजार मूल्यों पर प्रभाव (व्यापार रत्न द्वितीय खण्ड पहला, तीसरा, चौथा और पॉचवा प्रकरण)

(3) स्टॉक एक्सचेंज की शेयर मार्केट शब्दावली का संक्षिप्त परिचय ।

5– (1) भारतीय स्टॉक एक्सचेंज में दर्ज कुछ प्रमुख वस्तुओं के शेयरों में ज्योतिषशास्त्रीय कारक ग्रह नक्षत्रादि तथा इनकी स्टॉक एक्सचेंज में तेजी मन्दी पर ग्रह योगों के (में तेजी मन्दी पर ग्रह योगों के) प्रभाव का

व्यावहारिक अध्ययन (क) आटोमोबाइल्स (ख) साफ्टवेयर (वित्त बैंकिग (घ) सीमेन्ट (ड) फार्मा केमिकल्स ।

(24)

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22
वाणिज्य ज्योतिष 305

यूनिट–1

1.

(अ) ग्राहों के द्रव्य पदार्थ आदि

(ब) राशियों के द्रव्य पदार्थ रंग आदि

(स) नक्षत्रों के द्रव्य पदार्थ रंग आदि

2.

(अ) वायदा व्यापार में सफलता के सूत्र

(ब) वायदा व्यपार का ज्योतषि से सम्बंध

यूनिट–2

(अ) नक्षत्र एंव राशियों पर ग्रह संचार का प्रभाव

(ब) ग्रहों के उदयास्त, वर्की मार्गी होने पर तेजी मंदी पर प्रभाव

(स) व्यापार में बुद्ध का महत्तव व उदयास्त, वर्की मार्गी होने का विशेष प्रभाव

(द) तेल, तिलहन,अनाज, सोना चॉदी के मुख्य ग्रह योग

यूनिट–3

(अ) सर्वतोभद्र चक्र पर वेध से तेजी मन्दी का सामान्य परिचय

(ब) ग्रहों की दृष्टि व युति से तेजी मन्दी का ज्ञान एंव ग्रहों की अंशात्मक दृष्टियॉ

(स) घबाड मुहुर्त का ज्ञान एंव मुहुर्त का तेजी मन्दी पर प्रभाव

यूनिट–4

(अ) शेयर मार्केट की शब्दावली तेजडिया,मंदडिया,तेजी,मंदी,गिरावट, सुधार मजबूत,डिबेंचर आदि की परिभाषा

(ब) शेयर मार्केट पर ग्रहों का प्रभाव

(स) सूर्य नक्षत्र भ्रमध द्वारा तेजी मंदी का ज्ञान

यूनिट–5

(अ) जन्म पत्री से व्यापार योग विचार उद्योग,ऐजेन्सी,ट्रेडिंग कार्य आदि वाणिजयिक उपकम विचार

(ब) जन्म पत्रिका में ग्रह योग के अनुसार किस वस्तु,व्यापार,उद्योग,ऐजेन्सी कार्य लाभप्रद होगा

(स) पत्रिका के आधार पर शेयर विचार

(द) स्टाक के आधार पर शेयर की घटी वढी के योग व इनका व्यवहारिक अध्ययन जैसे आटोमोबाइल,सोफटवेयर,सीमेन्ट,फर्टीलाइजर ।

ज्योतिर्विज्ञान अध्ययनशाला
जीवीजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22

306 वैकल्पिक – अर्वाचीन ज्योतिर्विज्ञान

1– रेखागणित प्रथमाध्याय का प्रमेयोपपाद्य साध्य 1 से प्रमेयोपपाद्य प्रमेयोगपपाद्य साध्य 10 तक ।
2– रेखागणित प्रथमाध्याय का वस्तूपपाद्य साध्य 1उ वस्तूपपाद्य साध्य 9 तक तथा ऊँचाई एवं दूरी ज्ञात करने की विधियॉ ।
3– सरल त्रिकोण मिति का प्रथम एवं द्वितीय अध्याय ।
4– सरल त्रिकोण मिति का तृतीय अध्याय ।
5– चापीयत्रिकोणमिति एवं गोलीयत्रिकोणमिति का प्रारम्भिक ज्ञान ।

मुख्य ग्रन्थ :–

1–	संक्षिप्त नवीन रेखागणित	एच.एस. हाल एवं एफ.एच. स्टीवेन्स
2–	रेखागणित	डॉ. नागेन्द्र पाण्डेंय
3–	सरलत्रिकोण मिति	श्री बलदेव मिश्र
4–	चापीय त्रिकोणमिति	श्री सुधाकर द्विवेदी
5–	माध्यमिक गणित भाग 1	एन.सी.ई.आर.टी.

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1–	सरलत्रिकोणमिति	श्री बापूदेव शास्त्री
2–	माध्यमिक गणित भाग 2	एन.सी.ई.आर.टी.

चतुर्थ सेमेस्टर सत्र 2020–22

401 प्रथम प्रश्न पत्र : होरा ज्योतिष–तृतीय

401, Hora Jyotish Third

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1. माभस योग
2. विविध योग
3. रविचंद्र योग

द्वितीय इकाई

1. राज योग
2. .....
3. .....

तृतीय इकाई

1. आयुर्वेद,....., लग्न, निसर्ग, अंश आयु तथा केवल अष्टमेश से
2. आयु वृद्धि, आयु प्रकार
3. .....

चतुर्थ इकाई

1. वृत्ति व्यवसाय निर्णय
2. ..... स्वामी के 18 गुणादि

पंचम इकाई

1– वर कन्या को जन्म पत्रिका में कलत्र दोश विचार, कन्या की जन्म पत्रिका में मांगल्य (सौभाग्य) विचार, वर कन्या की पत्रिका में सप्तम, और अनय भाव, कारक ग्रह, गुरु शुक्र आदि विचार, दाम्पत्य सुख न्यूवता, वैधव्य, सौभाग्य योग विचार,

(27)

चतुर्थ सेमेस्टर सत्र 2020–22

402 द्वितीय प्रश्न पत्र : अध्यात्म ज्योतिष

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1– वेद के छः अंगों के नाम व उनकी विषय वस्तु का संक्षिप्त परिचय प्रमुख षडदर्शनी का सामान्य संक्षिप्त परिचय ।
2– कर्मफल सिद्धांत–धर्मग्रंथ,षडदर्शन में, भारतीय ज्योतिष में और पाश्चात्य ज्योतष के प्रति दृष्टि, पुर्नजन्म सिद्धांत ।
3– पुरुशार्थ चतुश्टय का ज्योतिश में भूमिका ।
4– योग वशिष्ठ में दैव या प्रारब्ध एवं पुरुशार्थ सम्बन्धी विचार ।

द्वितीय इकाई

1– अध्यात्म ज्योतिष की विषेशता तथा कार्य क्षेत्र ।
2– ज्योतिष के माध्यम से पूर्वजन्म कृत कर्म जन्म के प्रभाव का उद्घाटन ।
3– ग्रह युथियॉ से प्रारम्भ कर्म का बोध ।
4– विभिन्न प्रकार के प्रारब्धों के प्रतिक ग्रह ।
5– पाश्चात्य अध्यात्म ज्योतिष पद्धति से पूर्व जन्मकृत कर्म का आकलन ।
6– ग्रहों की केन्द्र, त्रिकोण दृश्टियों की पाश्चत्य अध्यात्मिक व्याख्या ।
7– ग्रहों के ग्रीक प्रतीक चिन्हों का अध्यात्मिक आशय ।

तृतीय इकाई

1– श्वेताश्वतर उपनिशद् अध्याय 1 से 4 तक (सरल हिंदी में व्याख्या)
2– उपनिशदों के अध्यात्म भाव प्राप्ति मार्ग अथवा देवयान मार्ग का ज्योतिश के उत्तरायण सूर्य मार्ग से सम्बन्ध,
डपनिशदों के पुनः जन्म प्राप्ति अथवा पितृ मार्ग का ज्योतिश के दक्षिणयन सूर्य मार्ग से सम्बन्ध ।

चतुर्थ इकाई

1– ग्रह की पंच महाभुतात्मक और सात्विक, राजसिक और तामसिक प्रकृति का व्यक्तित्व व मनोकृति पर प्रभाव ।
2– पारम्परिक साहित्य में अध्यात्म ज्योतिश के तत्त – प्रवज्या योग, निर्वाण मरणान्तर गति ज्ञान, पूर्व व पुन जन्म ज्ञान,
मोक्ष साधन ।
3– 12 भावों तथा 12 राशियों तथा नव ग्रहों का त्रिगुणात्मक और पजच तत्व प्रकृति के अनुसार आध्यात्मिक मानसिक
प्रवृतियां ।
4– षडचक्रों का संक्षिप्त परिचय तथा इनका सम्बन्ध ।
5– अश्टांग योग का संक्षिप्त परिचय तथा इसका 12 भावों से सम्बन्ध ।

पंच इकाई

1– आत्म अनुसन्धान के चार प्रमुख मार्ग का संक्षिप्त परिचय तथा इनका अध्यात्म ज्योतिश के माध्यम से साधक या जिज्ञासू
की जन्म पत्रिका का व्यावहारिका आकलन ।
2– अध्यात्म भाव के प्रमुख आत्म ज्ञानी, संत महात्मा, भक्त, कर्म योगी, ज्ञान योगी राज योगी जातकों का जन्म पत्रिकाओं
का अध्यात्म ज्योतिश की दृश्टि से व्यवहारिक ज्ञान ।
3– सगुण भक्ति मार्ग में एवं सकाम सांसारिक विविध कार्य सिद्धि हेतु जन्म पत्रिका के मात्र स्थान नवम् स्थान आदि से व
कारकांश से आराध्य देव का निर्धारण तथा मन्त्र व्रत, दान हवन ।

मुख्य ग्रन्थ

1– अध्यात्म ज्योतिश – ह.न. काटवे ।
2– दैव विचार – ह.न. काटवे ।
3– भक्ति योग – स्वामी विवेकानंद रामकृश्ण मठ धन्तोली, नागपुर ।
4– ज्ञान योग – स्वामी विवेकानंद रामकृश्ण मठ धन्तोली, नागपुर ।
5– कर्म योग – स्वामी विवेकानंद रामकृश्ण मठ धन्तोली, नागपुर ।
6– राजयोग – सवामी विवेकानंद रामकृश्ण मठ धन्तोली, नागपुर ।
7– धर्म विज्ञान – स्वामी विवेकानंद रामकृश्ण मठ धन्तोली, नागपुर ।
8– वृहत पराशर होरा शास्त्र ।
9& Esoteric Astrology – Alan Leo I

चतुर्थ सेमेस्टर सत्र 2020–22

403 तृतीय प्रश्न पत्र : प्रश्न ज्योतिष

403, Third Paper - Prashna Jyotish

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा **प्रथम**

इकाई

1– प्रश्न में ताजिक ग्रह दृश्टि विचार, ग्रह मैत्री विचार, ग्रहों के दीप्तांश (केदार दत्त जोशी कृत ताजिक नील कंठी दृश्टि
फलाध्याय ।
2– प्रश्न में विचारणीय इक्क्बालादि सोलह ताजिक योग (उपर्युक्त का ग्रह योगाध्याय)
3– प्रश्न में विचारणीय दीप्त मुद्रित आदि अवस्थाएं ।

द्वितीय इकाई

1– प्रश्न तत्र केदार दत्त जोशी कृत ताजिक नीलकंठी श्लोक 1 से 114 तक : विविध प्रश्न विचार ।

तृतीय इकाई

1– प्रश्न तंत्र (उपरोक्त) श्लोक 115 से 121 तथा प्रकीर्ण अध्याय ग्रह दीप्तांश सहित ।

चतुर्थ इकाई

1– पटपंचाशिका पृथुयशस कृत : होरा, गमनागमन, जय पराजय, शुभाशुभ, प्रवांस, नश्ट – प्राप्य और मिश्र अध्याय ।

पंचम इकाई

1– भुवन दीपक : आचार्य प्रदाप्रभु सूरी कृत : गृहस्वरुप द्वार से गर्भादि, प्रश्न द्वार अध्याय तक

मुख्य ग्रन्थ :–

1– ताजिक नीलकंठी : प्रो. केदार दत्त जोशी की टीका
2– षट पंचाशिका
3– भुवन दीपक

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1– कृश्णमूर्ति पद्धति छठी रीडर ।
2– ज्योतिश शास्त्र में स्वर विज्ञान का महत्व : प्रो. केदार दत्त जोशी ।
3– होरा सार ।
4– प्रश्न तंत्र (अंग्रेजी) बी.वी. रामन ।
5– प्रश्न मार्ग ।
6– विभिन्न होरा ग्रंथो में प्रश्न ज्योतिश के सन्दर्भ ।
7– प्रश्न दीपक एल.आर. चौधरी (अंग्रेजी) सागर पल्ब्लकेशन्स ।
8– नश्ट जातकम् (संग्रह) आचार्य मुकुंद दैवैज्ञ, रंजन पब्लिकेशन ।

(30)

चतुर्थ सेमेस्टर सत्र 2020–22

404 चतुर्थ प्रश्न पत्र : ताजिक वर्षफल

404, Fourth Paper - Annual Horoscopy

85 अंक मुख्य परीक्षा, 15 अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा

प्रथम इकाई

1– वर्श मान, नवीन वर्श मान ही ग्रहण योग्य वर्श प्रवेश, वर्श लग्गन ग्रह स्पश्ट, पञ्च वर्गीय बल साधन वर्शेश निर्णय ग्रह

दृश्टि विचार ग्रहों के दीप्तांश (प्रथम अध्याय एवं दृश्टि फलाध्याय) विशोत्तरी मुदृा दशा साधन ।

द्वितीय इकाई

वर्श कुंडली में इक्क्वालादि सोलह योगी का विचार (ग्रह योगाध्याय) मुथहा साधन व विचाार (मुंथ्हा फलाध्याय)

तृतीय इकाई

1– पात्यायिनी दशा अध्याय ।
2– वर्शलेग्न से अरिश्ट विचार व ।
3– अरिश्ट भंग अध्याय ।

चतुर्थ इकाई

1– द्वादश भाव विचार (सार संक्षेप), दशा विचार ।

पंचम इकाई

1– अश्टक वर्ग साधन : त्रिकोण व एकाधिपत्य शोधन राशिपिंड ग्रहपिंड आनयन व सर्व अश्टक वर्ग ।

(सचित्र ज्योतिश शिक्षा खण्ड 2, गणित–1 : वी.एल. ठाकुर कुल)

2– ग्रहों के शुभाशुभ वर्श, धनलाभ, राज योग आदि का समुदाय अश्टक वर्ग से भविश्य कथन (अश्टक वर्ग महा निवंध

आचार्य मुकुंद दैवज्ञकृत)

मुख्य ग्रन्थ :–

1– ताजिक नीलकंठी व्याख्याकार प्रो. केदारदत्त जोशी (मोतीलाल बनारसीदास)
2– सचित्र ज्योतिश शिक्षा खण्ड 2 (गणित खण्ड–1) ज्यो बाबू लाल ठाकुर ।
3– अश्टकवर्ग महानिबंध आचार्य मुकुंद दैवज्ञ, रंजन पब्लिकेशंस ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1– वर्शफल विचार ज्योतिर्विद परमानन्द शर्मा, गोयल एंड क. दरीया दिल्ली – 6
2– विविध फलित ग्रंथो का अश्टकवर्ग फलादेश ।

(31)

चतुर्थ सेमेस्टर सत्र 2020–22

405 रत्न विज्ञान

405 Stone Scince

1. बृहतसंहिता का रत्नपराक्षध्याय, मुक्तालक्षणाध्याय, मणिक्यलक्षणाध्याय, मरकतलक्षणाध्याय,।
2. रत्न विमर्श का रत्न एवं ग्रह, रत्नों की उत्पत्ति, रत्नों के प्रकार एंव रत्न परीक्षा।
3. रत्न विमर्श के अनुसार रत्न धारण विधि, नवग्रहों के रत्न उपरत्न, रत्नों के परिणाम।
4. रत्नों की विषेशता रत्न का अयुर्वेद से सम्बन्ध।
5. रत्नों का रोगों से सम्बन्ध तथा रत्नों का विविध प्रयोग।

प्रमुख ग्रन्थ

1. बृहतसंहिता – बराह पं. सीताराम झा
2. रत्न विमर्श – डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रत्न प्रदीप
2. रत्न सार
3. Gem Stones- Call Hall
4. रत्न परीक्षा

चतुर्थ सेमेस्टर सत्र 2020–22
406 वर्षा एवं मौसम विज्ञान ज्यातिष :–

1– बृहत्संहिता के गर्भलक्षणध्याय, गर्भधारणाध्याय एवं प्रवर्शणाध्याय ।
2– बृहत्संहिता का रोहिणियोगाध्याय, स्वातियोगाध्याय, आशाढ़ीयोगाध्याय, सद्योवर्शणाध्याय ।
3– बृहत्संहिता का वातचक्राध्याय, निर्घातलक्षणाध्याय ।
4– भद्रबाहु संहिता का मेघकाण्डाध्याय ।
5– भद्रबाहु संहिता का वातलक्षणाध्याय एवं विद्युत्लक्षणाध्याय ।

मुख्य ग्रन्थ :–

1– बृहत्संहिता – वराह – पं. सीताराम झा ।
2– भद्रबाहु संहिता – श्री नेमिचन्द्रशास्त्री ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1– अर्दभूतसागर – बल्लाल ।
2– गर्ग संहिता – गर्ग ।
3– नारदीय संहिता – नारद ।
4– बृश्टि प्रबोध ।

तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020–22
वाणिज्य ज्योतिष 305

यूनिट–1

1.

(अ) ग्राहों के द्रव्य पदार्थ आदि

(ब) राशियों के द्रव्य पदार्थ रंग आदि

(स) नक्षत्रों के द्रव्य पदार्थ रंग आदि

2.

(अ) वायदा व्यापार में सफलता के सूत्र

(ब) वायदा व्यपार का ज्योतषि से सम्बंध

यूनिट–2

(अ) नक्षत्र एंव राशियों पर ग्रह संचार का प्रभाव

(ब) ग्रहों के उदयास्त, वर्की मार्गी होने पर तेजी मंदी पर प्रभाव

(स) व्यापार में बुद्ध का महत्तव व उदयास्त, वर्की मार्गी होने का विशेष प्रभाव

(द) तेल, तिलहन,अनाज, सोना चॉदी के मुख्य ग्रह योग

यूनिट–3

(अ) सर्वतोभद्र चक पर वेध से तेजी मन्दी का सामान्य परिचय

(ब) ग्रहों की दृष्टि व युति से तेजी मन्दी का ज्ञान एंव ग्रहों की अंशात्मक दृष्टियॉ

(स) घबाड मुहुर्त का ज्ञान एंव मुहुर्त का तेजी मन्दी पर प्रभाव

यूनिट–4

(अ) शेयर मार्केट की शब्दावली तेजडिया,मंदडिया,तेजी,मंदी,गिरावट, सुधार मजबूत,डिबेंचर आदि की परिभाषा

(ब) शेयर मार्केट पर ग्रहों का प्रभाव

(स) सूर्य नक्षत्र भ्रमध द्वारा तेजी मंदी का ज्ञान

यूनिट–5

(अ) जन्म पत्री से व्यापार योग विचार उद्योग,ऐजेन्सी,ट्रेडिंग कार्य आदि वाणिजयिक उपकम विचार

(ब) जन्म पत्रिका में ग्रह योग के अनुसार किस वस्तु,व्यापार,उद्योग,ऐजेन्सी कार्य लाभप्रद होगा

(स) पत्रिका के आधार पर शेयर विचार

(द) स्टाक के आधार पर शेयर की घटी वढी के योग व इनका व्यवहारिक अध्ययन जैसे आटोमोबाइल,सोफटवेयर,सीमेन्ट,फर्टीलाइजर ।